P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति–एक आर्थिक विश्लेषण जिला मुरैना (म.प्र.) के विशेष सन्दर्भ में

मनोज कुमार शर्मा
सहायक प्राध्यापक,
अर्थशास्त्र विभाग,
अम्बाह स्नातकोत्तर स्वशासी
महाविद्यालय, अम्बाह
मुरैना, म.प्र., भारत

सारांश

भारतीय समाज की परंम्परागत, रूढिवादी व्यवस्था में महिलाओं का योगदान उपेक्षित रहा है। उनकी भूमिका मात्र परिवार तक (ग्रहणी, माँ, पत्नी) सीमित रखी गई है और महिलाओं से यह अपेक्षा भी की गई कि वे पुरूष वर्ग के स्वामित्व को स्वीकार करते हुए पारिवारिक सेवाओं को ही अपना कर्तव्य समझें, पुरूषों की इसी सोच ने उसे अशिक्षित बनाये रखा जिसके कारण पंरम्परावादी समाज के शोषण एवं उत्पीणन को मूक बनकर सहन करती रही। शिक्षा के विकास के साथ–साथ उसे भौतिकवादी दृष्टिकोणों से अपने अस्तित्व का बोध हुआ और उसने सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में न केवल पुरूषों की बराबरी की है बल्कि पुरूषों से कहीं आगे बढ़कर समाज और राष्ट्र के विकास में अपना योगदान देकर नारी शक्ति को भी प्रदर्शित किया है। महिलाएँ आत्मनिर्भर होकर पुरूष की आधीनता दमन एवं उत्पीड़न से मुक्त हुई है। किन्तु पुराने संस्कार तथा मान्यतायें नई अर्थव्यवस्था के आने के साथ ही खत्म नहीं होतीं वे लम्बे समय तक कायम रहती हैं जो तब तक समाप्त नही होगे जब तक कि भारत की प्रत्येक महिला शिक्षित होकर जागरूक नही हो जाती। अतः आवश्यकता इस बात की है कि महिलाओं के शैक्षिणिक स्तर में प्रभावी प्रयास किये जायें।

मुख्य शब्द : महिला, शिक्षा, विकास, सांख्यिकी, शिक्षण संस्थान, पुरूष, प्राथमिक, माध्यमिक, उच्चतर, महाविद्यालय।

प्रस्तावना

समावेश भारत के विकास के एजेडे की आधारशिला है। सरकार द्वारा इस दिशा में प्रयासों को ''सबका साथ सबका विकास'' के मंत्र के माध्यम से तेज किया गया है। भारत द्वारा संधारणीय और समावेशी विकास को बढ़ावा देने के लिए सामायिक अवसरंचना पर होने वाले खर्च को प्राथमिकता देने की नितांत आवश्यकता है तथा उक्त खर्च को उपयुक्त बनाना होगा। भारत में जनसंख्या लाभ के सुयोग है, फिर भी भारत में शैक्षणिक मानकों में सुधार करके युवाओं को कौशलपूर्ण बनाकर नौकरी के अवसरों को बढ़ाकर और महिलाओं को सशक्त बनाने जैसे कार्यों के जरिए भविष्य में समृद्धशाली अर्थव्यवस्था की क्षमता को साकार करने में मदद मिलेगी।

भारत सधारणीय विकास लक्ष्यों को हासिल करने के लिए प्रतिबद्ध है और उन लक्ष्यों को प्राप्त करने में मजबूत सामायिक अवसरंचना महत्वपूर्ण मानी जाती है।

भारत का लैगिक समानता सूचकांक (जी. पी. आई.) शिक्षा के सभी स्तरों पर लड़कियों की शिक्षा में सुधार को दर्शाता है अपवाद के रूप में उच्च शिक्षा ही है। 7 वर्ष और इससे ऊपर आयु वर्ग के लिए वर्ष 2011 में कुल साक्षरता दर 73.0 प्रतिशत थी जिसमें पुरूष और महिलाओं का प्रतिशत क्रमशः 80.9 प्रतिशत और 64.4 प्रतिशत है। शैक्षणिक साँख्यिकी की एक झलक (ई.एस.ए.जी.) 2018 के अनुसार प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने पर जोर देने से कुल नांमकन दर (जी.ई.आर.) में सामाजिक श्रेणियों और महिलाओं के संबध में अच्छे परिणाम हासिल हुए है। इन वर्षों में माध्यमिक स्तर पर महिलाओं की भागीदारी के सम्बध में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। और बालिकाओं के लिए कुल नांमकन दर लड़को की कुल नांमकन दर से बढ़ गई है। किन्तु उच्चतर शिक्षा स्तर पर लड़कियों की नांमकन दर लड़कों की अपेक्षा कम है।

तालिका क्र. 01

स्कूली स्तर पर कुल नांमकन दर प्रतिशत एवं बीच में स्कूल छोड़ने की दर प्रतिशत

संस्था	पुरूष / महिला	कुल नांमकन दर 2016–17	बीच में स्कूल छोड़ने की दर 2016–17
प्राइमरी	पुरूष	94.02	6.3
	महिला	96.35	6.4
माध्यमिक	पुरूष	78.51	19.97
	महिला	80.29	19.81
उच्चतर	पुरूष	26.3	लागू नहीं
	महिला	25.4	लागू नहीं

स्त्रोत – शैक्षणिक साँख्यिकी 2018 की एक झलक–यू.डी.आई.एस.ई.– 2016–17

शिक्षा देश के सामाजार्थिक ताने–बाने को सन्तुलित करने का एक महत्वपूर्ण और उपचारात्मक भूमिका का निर्वाह करती है। भारत के नागरिक इसके लिए सबसे मूल्यवान संसाधन है, ऐसे में सवा सौ करोड़ से अधिक जनसंख्या वाले मजबूत देश को बेहतर गुणवत्ता वाला जीवन यापन के लिए मौलिक शिक्षा के रूप में विकास और देखभाल की आवश्यकता है। जिसे केवल शिक्षा की मजबूत नीवं निमार्ण से ही हासिल किया जा सकता है।

अध्ययन का उद्देश्य

किसी भी क्षेत्र के पूर्ण आर्थिक विकास के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वहाँ पर आधार भूत संरचना वाले साधनों का व्यापक रूप से विस्तार हो। इस शोघ आलेख का मुख्य उद्देश्य जिला मुरैना में महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति का पता लगाना है जो इस क्षेत्र के आर्थिक विकास की प्राथमिक आवश्यकता है।

अध्ययन क्षेत्र

जिला मुरैना मध्यप्रदेश राज्य के चंबल संभाग में स्थित है म. प्र. में इसकी भौगौलिक स्थिति उत्तर पश्चिम में है यह 25^0 15 से 26^0 52 उत्तरी अक्षांश तथा 76^0 22 से 78^0 42 पूर्वी देशांतर रेखाओं के अन्तर्गत स्थित है। जिले के उत्तर पूर्व में उत्तरप्रदेश उत्तर पश्चिमम में राजस्थान स्थित है जिले की सीमाएँ अधिकतर प्राकृतिक है जो चंबल, पार्वती तथा इसकी सहायक नदियों द्वारा बनायी गई है। जिले का कुल भौगौलिक क्षेत्रफल 47733 वर्ग कि. मी. है 2011 की जनगणना के अनुसार जिले की कुल जनसख्या 1965970 है तथा जनसख्या घनत्व 393 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है।

विधितंत्र

प्रस्तुत शोघ आलेख मूलतः द्वितीयक संमको पर आधारित है जिससे अध्ययन के परिणामों में सुस्पष्टता प्राप्त हो सके जो शासकीय अभिलेखों एवं अन्य प्रकाशित सामग्री से प्राप्त किये गये है। संमको का आवश्कता अनुसार सारणीयन एवं उनका विश्लेषण भी किया गया है।

संकल्पना

प्रस्तुत शोघ आलेख में सर्वप्रथम जिला मुरैना में महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति को ज्ञात करने का प्रयास किया गया है। तत्पश्चात यह ज्ञात किया गया है कि महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति का प्रभाव जिले की अर्थव्यवस्था पर पड़ रहा है अथवा नहीं। साँख्यिकी तथ्यों की प्रकृति को देखते हुए चुंने गये शोघ आलेख की प्रासंगिकता को सिद्ध करने के लिए निम्न संकल्पनाओं को स्वीकार किया गया है।

1. अध्ययन क्षेत्र में महिला शिक्षा की स्थिति में सुधार हुए है।
2. महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति में सुधार से सामाजिक आर्थिक सुधार हुए है।

तालिका क्र. 01

अध्ययन क्षेत्र में साक्षरता स्थिति (महिला/पुरूष) प्रतिशत में

वर्ष	ग्रामीण साक्षरता			नगरीय साक्षरता			कुल साक्षरता		
	पुरूष	महिला	कुल	पुरूष	महिला	कुल	पुरूष	महिला	कुल
1981	35.24	6.6	22.21	59.29	32.17	47.01	38.54	10.09	25.6
1991	59.76	17.68	41.12	76.47	44.15	62.07	63.53	23.79	45.93
2001	77.9	41.8	61.6	86.9	62.3	75.6	79.9	46.2	64.7
2011	81.64	53.68	68.91	86.98	66.74	77.6	77.25	45.52	70.8

स्रोत :– जनगणना पुस्तिका म. प्र. वर्ष 2011

तालिका क्र. 01 से स्पष्ट है कि वर्ष 1981 में अध्ययन क्षेत्र जिला मुरैना में ग्रामीण पुरूष साक्षरता 35.24 प्रतिशत है वहीं स्त्री साक्षरता 6.6 प्रतिशत है। जिससे स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में महिला की शिक्षा हेतु प्रयास बहुत ही कम रहे तथा महिलाओं की सामाजिक स्थिति भी बहुत दयनीय रही होगी इसे पुरूष प्रधान कहना उचित होगा। वर्ष 1991 में ग्रामीण साक्षारता के प्रतिशत में वृद्धि हुई और यहाँ पुरूष साक्षरता बढ़कर 59. 76 प्रतिशत हो गई अर्थात वर्ष 1981 की तुलना में इसमें 24.52 प्रतिशत की वृद्धि हुई वहीं महिला साक्षरता जो वर्ष 1981 में 6.6 प्रतिशत थी वह वर्ष 1991 में बढ़कर 17.68 प्रतिशत हो गई इसमें 11.08 प्रतिशत की वृद्धि हुई। वर्ष 2001 में पुरूष साक्षरता में वर्ष 1991 की तुलना में 18.14 तथा महिला साक्षरता 24.12 प्रतिशत की वृद्धि हुई जो पुरूष साक्षरता प्रतिशत से कहीं अधिक रही निःसंकोच कहा जा सकता है कि इक्कीसवी सदी में महिलाओं ने समाज में अपना स्थान बना लिया है। इसी प्रकार वर्ष 2011 में पुरूष साक्षरता में मात्र 3.74 प्रतिशत कि वृद्धि दर्ज की गई वहीं महिला साक्षरता में 11.88 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई जो पुरूष साक्षरता की तुलना में चार गुना अधिक है। इसी प्रकार नगरीय साक्षरता की स्थिति का अवलोकन करें तो स्पष्ट है कि वर्ष 1981 में पुरूष नगरीय साक्षरता प्रतिशत जो 59.29 प्रतिशत है तथा स्त्री नगरीय साक्षरता 32.17 प्रतिशत है जो वर्ष 1991 में 76. 47, 2001 में 86.9 प्रतिशत तथा वर्ष 2011 में 86.98 प्रतिशत वृद्धि हुई अर्थात पुरूष नगरीय साक्षारता प्रतिशत वृद्धि क्रमशः 17.18, 10.43 एवं 0.08 रही इसी प्रकार महिला नगरीय साक्षरता प्रतिशत वृद्धि क्रमशः 11.98, 18 एवं 4.44 प्रतिशत रही जो पुरूष नगरीय साक्षरता प्रतिशत से कहीं अधिक है।

तालिका क्र. 02

शैक्षणिक संस्थाओं में छात्र/छात्राओं की संख्या एवं उनका प्रतिशत (प्राथमिक से हाईस्कूल तक)

वर्ष	प्राथमिक शालाऐं			माध्यमिक शालाऐं			हाईस्कूल		
	पुरूष	महिला	कुल	पुरूष	महिला	कुल	पुरूष	महिला	कुल
2011-12	181640 (57.75)	132902 (42.25)	314542	96807 (66.8)	48115 (33.2)	144922	23776 (22.19)	14333 (37.81)	37909
2012-13	168831 (54.4)	141564 (45.6)	310395	80367 (52.76)	71978 (47.24)	152345	31031 (65.12)	16617 (34.88)	47648
2013-14	169757 (54.2)	143444 (45.8)	313201	80747 (52.65)	72610 (47.35)	153557	31950 (65.07)	17150 (34.93)	49100
2014-15	170707 (54.04)	145154 (45.96)	315861	80980 (52.64)	72851 (47.36)	153831	32393 (64.82)	17159 (35.18)	49972

स्त्रोत :– जिला साँख्यिकी पुस्तिका मुरैना वर्ष 2015

तालिका क्र. 02 में शैक्षणिक संस्थाओं में छात्र/छात्राओं की संस्था का प्रतिशत दिखाया गया है। जो प्राथमिक, माध्यमिक एवं हाईस्कूल तीनों स्तर पर अलग–अलग महिला एवं पुरूष साक्षरता को प्रदर्शित करती है। प्राथमिक स्तर पर महिला साक्षरता का प्रतिशत वर्ष 2011–12 से 2014–15 तक क्रमशः 42.25, 45.60, 45.80 एवं 45.96 प्रतिशत रहा जो इस बात का संकेतक है कि महिला साक्षरता में प्रतिवर्ष वृद्धि हो रही है इसी प्रकार माध्यमिक स्तर पर यह प्रतिशत वर्ष 2011–12 से वर्ष 2014–15 तक क्रमशः निम्न प्रकार रहा 32.20, 47.24, 47.35, 47.36 इस स्तर पर वर्ष 2011–12 में महिला साक्षरता में 32.20 प्रतिशत थी जो वर्ष 2014–15 में 47.36 हो गयी यह उल्लेखनीय वृद्धि इस बात का स्पष्ट संकेतक है कि निश्चित ही आर्थिक विकास के साथ–साथ महिलाओं के शैक्षणिक स्तर में सुधार हुआ है। इसी प्रकार यदि हम हाईस्कूल स्तर पर महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति को देखें तो स्पष्ट होता है कि वर्ष 2011–12 से 2014–15 तक क्रमशः प्रतिशत निम्न प्रकार रहा है 37.81, 34.88, 34.93, 35.18 हाईस्कूल स्तर पर शैक्षणिक संस्थाओं में महिलाओं की संख्या में वर्ष 2011–12 की तुलना मे वर्ष 2012–13 में 2.93 प्रतिशत की कमी आई है इसके अतिरिक्त वर्ष 2013–14 एवं 2014–15 में आशिक वृद्धि दर्ज की गई है।

तालिका क्र. 03
शैक्षणिक संस्थाओं में छात्र/छात्राओं की संख्या एवं उनका प्रतिशत (उचत्तर माध्यमिक/ महाविद्यालय/व्यावसायिक शिक्षण संस्थान)

वर्ष	उच्चत्तर माध्यमिक			महाविद्यालय			व्यावसायिक शिक्षण संस्थान		
	पुरूष	महिला	कुल	पुरूष	महिला	कुल	पुरूष	महिला	कुल
2011-12	30712 (79.27)	8030 (20.73)	38742	1193 (30.54)	2713 (69.46)	3906	1333 (59.4)	911 (40.6)	2244
2012-13	18955 (61.33)	11949 (38.66)	30904	1241 (34.19)	2388 (65.81)	3629	1099 (66.73)	548 (33.27)	1647
2013-14	19745 (61.97)	12115 (38.03)	31860	1310 (34.94)	2440 (65.06)	3750	1150 (65.49)	606 (34.51)	1756
2014-15	20266 (62.28)	12273 (37.72)	32529	1410 (38.03)	2787 (61.97)	4497	1271 (58.2)	913 (41.8)	2184

स्त्रोत :– जिला साँख्यिकी पुस्तिका मुरैना वर्ष 2015

तालिका क्र. 03 में उच्चतर माध्यमिक, महाविद्यालयीन तथा व्यावसायिक शैक्षणिक स्तर को दिखया गया है। वर्ष 2011–12 में उच्चतर माध्यमिक शिक्षा में महिलाओं का प्रतिशत 20.73 था जो वर्ष 2012–13, 2013–14, 2014–15 में क्रमशः 38.66, 38.03 तथा 37.72 प्रतिशत रहा वर्ष 2011–12 की तुलना की अपेक्षकृत सभी वर्षों में महिला शिक्षा की स्थिति में बढ़ोतरी दर्ज हुई है। इसी प्रकार महाविद्यालय स्तर पर शैक्षणिक संस्थाओं में महिलाओं का प्रतिशत वर्ष 2011–12 से 2014–15 तक क्रमशः निम्न प्रकार रहा है 69.46, 65.81, 65.06 तथा 61.97। उक्त वर्षो में महाविद्यालय स्तर पर पुरूषों की तुलना में महिलाओं का प्रतिशत लगभग दोगुने से अधिक रहा है किन्तु शैक्षणिक संस्थाओं में महिलाओं की संख्या में निरन्तर कमी आई है। जिसका कारण निःसन्देह महिला सुरक्षा में कमी हो सकता है। व्यावसायिक शैक्षणिक संस्थाओं में महिलाओं का प्रतिशत वर्ष 2011–12 से वर्ष 2014–15 में क्रमशः निम्न प्रकार रहा 40.60, 33.27, 34.51, 41.80 बीच के वर्षो में उतार चढ़ाव रहा किन्तु स्थिति सन्तोष जनक रही है।

निष्कर्ष

समावेशी विकास की संकल्पना तब तक अधूरी मानी जायेगी जब तक की समाज में महिलाओं को पुरूषों के समान सामाजिक आर्थिक एवं राजनैतिक स्तर पर बराबरी का दर्जा हासिल न हो। शिक्षा प्रत्येक समाज, क्षेत्र एवं राष्ट्र की बुनियादी आवश्यकता है विशेष रूप से माँ को बच्चे का प्रथम गुरू कहा जाता है जब तक महिला शिक्षित नही होगी तब तक बच्चे का विकास संम्भव नही है। अध्ययन क्षेत्र में महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति में प्राथमिक, माध्यमिक, उच्चतर एवं महाविद्यालय स्तर पर सुधार हुए है निःसंदेह जो इस क्षेत्र की आर्थिक विकास का प्रतीक है। किन्तु इस दिशा में सार्थक प्रयासों की आवश्यकता आज भी है।

संदर्भ

शर्मा रमा एवं एम. के. मिश्रा – महिला विकास, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2012

गुप्ता डॉ. सुभाष चद्र – कार्यशील महिलाएं एवं भारतीय समाज, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2010

भारत 2017 – प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली।

आर्थिक समीक्षा – 2018–19, भारत सरकार वित्त मंत्रालय आर्थिक प्रभाव, नई दिल्ली

जिला सांख्यिकी पुस्तिका 2015, जिला मुरैना (म. प्र.)